JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूफीमत का उद्भव

मनजीत
शोधार्थी रू एम.फिल
इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा

शोध आलेख सार

जिस प्रकार मध्यकालीन भारत में हिन्दुओं में भक्ति–आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उसी प्रकार मुसलमानों में प्रेम–भक्ति के आधार पर सूफीवाद का उदय हुआ। सूफी शब्द की उत्पत्ति कहाँ से हुई, इस विषय पर विद्वानों में विभिन्न मत हैं।

मुख्य शब्द रू सफा, साफी, सोफिया, फना

सूफी शब्द की उत्पत्ति

जब सूफियों का जिक्र उठता है तो, आंखों के सामने सफेद चोगे में हाथ फैलाये घूमते लोगों का चित्र उभर आता है। लेकिन यह मात्र सूफियों का परिचय नहीं। इसके अलावा सूफियों का और भी परिचय है। सूफी शब्द जितना विस्तृत है, उतना रहस्यमय भी[1]।

सहल कुब्न आब्दिल्लाह अल् तस्तरी का विचार है–'जो व्यक्ति पाप से दूर रहता है, ईश्वर चिन्तन में सदैव तल्लीन रहता है, ईश्वर के लिए संसार से अलग रहता है और जिसकी दृष्टि में कीचड और कंचन समान हैं, वह सूफी है[2]।'

सूफी मत के बारे में और सूफी शब्द की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों की अलग–अलग धारणा है। अली हुजवेरी सूफी शब्द की उत्पत्ति सफा शब्द से मानते हैं[3]। इस विचारधारा को मानने वालों के अनुसार 'सूफी अपने मन को सांसारिक मोह–माया, छलकपट और बाह्य आडम्बरों से स्वयं को दूर रखता था और अपनी इंद्रियों को वश में रखता था। सूफी का विश्वास है कि परमात्मा की छाया मन में दर्पण पर तभी पडेगी, जब वह मन को सांसारिकता से दूर रखेगा।'

श्री ए0जे0अरबेरी ने इस कथन का समर्थन करते हुए कहा है 'तसव्वुफ'की निश्पत्ति अलकुशैरी के अनुसार–'सफा' शब्द से हुई जिसका अर्थ शुद्ध होना है और इनका संबंध सूफ वस्त्र से नहीं है[4]।

शेख फरीदुद्दीन अत्तार अपनी पुस्तक 'तजकिरातुलऔलिया' में सूफी शब्द की उत्पत्ति सफा शब्द से स्वीकार करते हैं। परन्तु व्याकरण के नियमों के अनुसार यह व्युत्पत्ति ठीक नहीं है, क्योंकि सूफी और सफा की धातुएं भिन्न–भिन्न हैं। सफा की धातु 'सफब' और सूफी की धातु सूफ है[5]। 'अलबेरूनी' जन्म 973 ई0 के जीवनकाल में सूफी शब्द की व्युत्पत्ति 'सूफी उन' से मानी जाती रही किन्तु अलबेरूनी ने इसे मानने से अस्वीकार कर दिया। उनके कथनानुसार सूफी वह युवक है जो 'सोफी' 'पवित्र' है। यह सोफी ही अलबेरूनी के कथनानुसार सूफी हो गया[6]।

उनी वस्त्र पहनने वाले व्यक्ति को सूफी माना जाता था पर अलबेरूनी के जन्म के बाद सूफी शब्द का अर्थ 'साफी' से लगाया जाने लगा। इन्होंने पवित्र मन वाले व्यक्ति को सूफी कहा।

आधुनिक काल के विद्वान जिनमें ब्राउन, बारबोरी तथा बलोउद्दीन प्रमुख हैं। सूफी से ही सूफी शब्द की उत्पत्ति मानते हैं। फारसी में रहस्यवादी साधकों पशमीना पोश उन धारण करने वाला कहा गया है[7]।

सूफी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में भिन्न–भिन्न विद्वानों के मत इस प्रकार हैं –

कुछ विद्वान सूफी शब्द का संबंध अहाबे सफूफा से जोड़ते हैं। महीने में हजरत मुहम्मद की बनाई हुई मस्जिद के पास एक छप्पर पडा था। उसके नीचे कुछ मुसलमान त्यागमय जीवन बिताते थे और संसार के आकर्शण से दूर रहकर एक चबूतरे पर पड़े रहते थे, वे वैरागी लोग असहाबे, सफूफा कहलाते थे। आगे चलकर सूफियों का रहन–सहन असहाबे सूफा जैसा था अतएव उन्हें सूफी कहा जाने लगा[8]।

ईरान के प्रसिद्ध सूफी कवि फरीदुद्दीन अत्तार ने अपने ग्रन्थ 'तजकिरातुल औलिया' में सूफीमत की सत्तर परिभाषाओं का उल्लेख किया है। जिनमें तेरह परिभाषाओं में 'सफा' शब्द का प्रयोग मिलता है। 'कश्तूल महजूब' के योग्य लेखक अलहुजबेरी ने सूफी शब्द का प्रयोग 'सफा' से ही बना माना है। 'सफा' शब्द का अर्थ पवित्रता है[9]। इस मत के अनुसार– 'जो लोग शुद्ध हृदय और पवित्र आचरण वाले थे, उन्हें सूफी की संज्ञा दी गई ।'

शशिकान्त 'सदैव' ने अपनी पुस्तक इश्क की खुशबू है सूफी में 'सफा' का अर्थ 'फना' बताया है। उनके अनुसार–'सूफी अर्थात् जो सफा हो जाए। जो बनकर मिट जाए उसे फानी कहते हैं। फना मौत को कहते हैं और इस मौत की तैयारी जिसकी हो गई है जिसने मौत को

समझ लिया अर्थात् जिसे मरने का डर नहीं रहा है वह सूफी है क्योंकि वह परमात्मा में इतना और इस कदर मिल गया कि बचा ही नहीं। खुद का कुछ विशेष ही नहीं रहा[10]।

इस मत को मानने वाले विद्वानों के अनुसार वो अपने हृदय को सांसारिक मोह–माया से दूर रखता था। उसका मानना था कि मनुष्य को परमात्मा की प्राप्ति तभी होगी जब वह स्वयं को छल–कपट से दूर रखे।

एक मत में सूफी शब्द की उत्पत्ति 'सफा' शब्द से मानता है जिसका अर्थ है पवित्रता। वास्तव में ये लोग शुद्ध हृदय और आचरण वाले थे जिस प्रकार ईसा मसीह के साथ 'हवारिस'। अब्दुल फिदा ने सूफी श्शब्द की उत्पत्ति सूफ शब्द से मानी है जिसका अर्थ कयामत के दिन से सूफी लोग सर्वप्रथम पंक्ति में होते थे।

सूफी शब्द की व्युत्पत्ति 'सूफ' पंक्ति से भी माना जाता है। निर्णय क दिन जो लोग अपने सदाचार एवं शुद्ध व्यवहार के कारण औरों से पृथक एक पंक्ति में खडे किये जाएंगे, वास्तव में उन्हीं को सूफी कहते हैं[11]। विद्वानों तथा सूफियों का एक बडा वर्ग सूफी शब्द की उत्पत्ति 'सूफ' कपडे से मानते हैं । कुछ संसार त्यागी लोग रेशम के कपडे न धारण करके उनी और खुरदरे वस्त्र पहनते थे। इब्न खलदून,डॉ0 निकोलसन, प्रो0 नोऐल विके और अधिकांश विद्वान सूफी शब्द की उत्पत्ति में इसी मत को स्वीकार करते हैं[12]।

उपर्युक्त तीनों मतों का खण्डन प्रसिद्ध विद्वान एवं सूफी सन्त गजाली ने किया कि 'व्याकरण के नियमों के अनुसार 'सफ' से सूफो शब्द की रचना हो ही नहीं सकती। इस्लाम का विष्व कोश इसी कथन की पुश्टि करता है कि सफा शब्द से सूफी शब्द की उत्पत्ति व्याकरण के नियमों के प्रतिकूल है[13]।'

उपरोक्त सभी मतों से स्पष्ट होता है कि सूफी शब्द की उत्पत्ति सूफ वस्त्र से हुई। जो लोग सांसारिकता का पूर्णतः त्याग कर सूफ वस्त्र धारण कर मन की शुद्धता पर बल देते हैं, उन्हें सूफी कहते हैं।

कुछ विद्वानों के अनुसार सूफी शब्द का संबंध यूनानी शब्द 'सोफिया' ज्ञान से है। इस प्रकार सूफी का अर्थ ज्ञानी होता है। सूफी लोग अध्ययनशील होते थे–ज्ञान प्राप्त करो, चाहे वह चीन में हो। एक सूफी का यह कथन सूफियों की ज्ञान पिपासा की पुष्टि करता है[14]। ग्रीक शब्द सोफिया से भी इसका संबंध जोडा जाता है।

सूफी का एक अर्थ और भी है। ग्रीक–यूनानी भाषा के मूल शब्द सोफिया बना है। इस सोफिया से निकला है सूफी शब्द और सोफिया का अर्थ है विज्डम अर्थात् विवेक अर्थात् जिसके पास बुद्धि है, ज्ञान है, सार है, होता है, बोध है, जिसके अंदर भीतर अंतस से जाने की क्षमता है

कला है वह है सूफी[15]। सूफी शब्द 'सोफिया' का रूपान्तर है जिसका अर्थ ज्ञान, ज्ञान के कारण ही इन्हें सूफी कहते हैं[16]।

मौलाना सिब्ली का कथन है कि तसव्वुफ शब्द वास्तव में फारसी के सीन अक्षर से था। इसकी धातु सौफ थी जिसका अर्थ यूनानी भाषा में बुद्धिमत्ता ह। दूसरी शताब्दी हिजरी में जब य्नानी पुस्तक का अनुवाद अरबी भाषा में हुआ तब यह शब्द अरबी भाषा में आया। कुछ विद्वानों के जीवन बिताने का ढंग यूनानी दार्शनिक जैसा था इसलिए उन्हें सूफी कहा गया। उस समय तक अरबी भाषा में सूफी शब्द सीन अक्षर से लिया जाता है। धीरे–धीरे इस शब्द को 'सुआद' अक्षर से लिया जाने लगा[17]।

प्रसिद्ध उर्दू उपन्यासकार मौलाना 'शरर' सूफी शब्द की उत्पत्ति पर विमर्श करते हुए इब्ने जौजी के मत का समर्थन करते हैं। इब्ने जौजी का कथन है कि प्राचीन काल में जब अरब लोग ज्ञानहीन और अशिक्षित थे तो उस समय अरब में एक ऐसी स्त्री थी जिसके बच्चे जीवित नहीं रहते थे। उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि मेरा कोई बच्चा जीवित रहा तो मैं उसे काबे की सेवा के लिए अर्पित कर दूंगी। उसका एक बच्चा जीवित रहा। उसने उस बालक को काबे की सेवा के लिए अर्पित कर दिया। उस बालक का नाम गौसबिनमर था। उसकी सन्तान 'सूफी' कहलाई। उस कबीले के लोग संसार को त्यागकर ईश्वर की साधना और ध्यान में लगे रहते थे। कालान्तर में जिन व्यक्तियों ने इस प्रकार का जीवन बिताया वे सूफा कबीले के संबंध में सूफी कहलाये[18]।

मौलाना कुशौरी अपनी 'कुशौरिया पत्रिका' में लिखते हैं कि सूफी शब्द जामिद वह शब्द जिसकी उत्पत्ति किसी शब्द से नहीं होती इसलिए यह शब्द किसी धातु से नहीं बना । इस शब्द का प्रयोग लबक उपाधि के रूप में हुआ [19]।

सूफीमत की उत्पत्ति और विकास–सूफीमत इस्लामी दर्शन कर उत्तरवादी संस्करण है जो इस्लाम की कट्टरपंथी कुरान समर्पित मान्यताओं के विरोध स्वरूप अरब में प्रवर्तित हुआ किन्तु फारस में जाकर विकसित हुआ। राजाश्रय के लोभ में इसे समय–समय पर कुरान की मान्यताओं को स्वीकार करने के लिए विवश होना पडा एवं कालान्तर में जैसे–जैसे अन्य धर्म, संस्कृति तथा दर्शन से सम्पर्क बढा। इसने अपनी उदारत से उनसे समन्वय स्थापित किया और अपने सिद्धान्तों में परिवर्तन कर लोकप्रियता प्राप्त की[20]।

सूफीमत का आरम्भ मुहम्मद साहब हिजरत सन् 623 ई0 से माना जाता है, प्रारम्भ मे सूफीमत मात्र एक इस्लामी प्रवृति मूलक धर्म माना जाता था। सूफीमत के आरम्भ में इसे इस्लाम के प्रधान अंग के रूप में स्वीकार किया गया है किन्तु इस दिशा में यह ध्यान रखना होगा

कि–'सूफीमत इस्लाम धर्म की षरतीय कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया का उसी प्रकार फल है जिस प्रकार हिन्दू धर्म साधना में वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया का फल वैषण्व मत ह[21]।

'सूफीमत' मनुष्य के मस्तिष्क को समझने की गवेषणा है। एक प्रकार से यह दर्शन से उच्च भूमिका पर स्थित है। सूफी तदन्तर विश्वास और प्रेम के पंखों पर उड कर प्रियतम का सानिध्य प्राप्त करता है[22]।

वस्तुतः प्रत्येक धर्म किसी नं किसी अंग में रहस्य भावना निहित होती है। हिन्दी में इसे सूफीमत तथा अरबी में 'तसव्वुफ' कहते हैं। सूफी को सालिक भी कहते हैं जिसका अर्थ अध्यात्मिक पथ की ओर अग्रसर होने वाले से लगाया जाता है। सूफीमत का मानने वाला ईश्वर का ही एक अंग है। वह प्रेम मार्ग में विश्वास रखता है वह न पूजा करता है न सत्कार करता है बल्कि वह प्रेम में सराबोर होकर उस पर भक्ति का सानिध्य पाकर उसका दीदार करना चाहता है। सूफीमत वास्तव में आर्य जाति के धार्मिक विकास के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ जबकि कुछ लोगों ने इसके अविर्भाव को सेमिटिक धर्म की विजय के विरूद्ध आर्यों आर्यों की प्रतिक्रिया माना है[23]। बहुत लोगों ने यह भी कहा है सूफीमत वास्तव में हिन्दुओं के वेदान्त का इस्लामी संस्करण है[24]।

सूफीमत का आविर्भाव–हजरत मुहम्मद स0 628–688 का स्वर्गवास हो जाने पर समाज में घोर अशांति एवं अराजकता का साम्राज्य चला और उनके उत्तराधिकारी का युग आरम्भ हुआ और वे इस्लाम धर्म का उत्तरोत्तर प्रचार और प्रसार करते गये। उनके उत्तराधिकारी चार खलीफाओं मे अबूबकर, उमर, उस्मान एवं अली का नाम प्रमुख हे जिन्होंने उस समय धर्म का पूर्ण प्रचारर करना आरम्भ कर दिया। धीरे–धीरे यह धर्म अरब देश से लेकर क्रमशः भारत, फिलिस्तीन, मिस्र, ईरान, स्पेन एवं तुक्रिस्तान तक फैल गया।

रसूल हजरत मुहम्मद के देहवसान के थोडे ही समय बाद उनके जीवन एवं तर्कों से प्रभावित होकर इस धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय प्रकट हुए। इसका प्रथम विभाजन राजनीतिक आधार पर हुआ। सर्वप्रथम खारिजी, मुरीद, शिया और कादिरी सम्प्रदाय दृष्टिगोचर हुए[25]।

खारिजी सम्प्रदाय के मानने वाले लोग संघषरत थे। युद्ध करना उनका शौक था। उनकी उत्पत्ति इस्लाम की प्रचलित मान्यताओं के विरोध के कारण हुई। इनके प्रमुख सिद्धान्त थे–

1. खलीफा की नियुक्ति चुनाव द्वारा होनी चाहिए और उसे मुसलमानों का विश्वासपात्र होना चाहिए[26]। कोई भी अरब निवासी मुसलमान खलीफा हो सकता है और पापाचरण करने पर वह पद–मुक्त या प्राण दण्ड का भागी हो सकता है [27]।

2. कोई मुसलमान पाप का प्रायश्चित किए बिना मर जाये तो उसे हमेशा के लिए दोजख नरक में कष्ट भोगना पडता है।

3. जा नमाज नियमित रूप से नहीं पढता, रोजा नहीं रखता अथवा अन्य धार्मिक कृत्यों और नियमों का समुचित पालन नहीं करता, वह काफिर है।अन्य मुसलमान यदि खारिजियों के मत को नहीं मानते तो उनसे लडाई करनी चाहिए और उन्हें खत्म कर देना चाहिए [28]।

खारिजियों के विरोध मे दो प्रमुख सम्प्रदाय अस्तिव में आये। मुरीजी और शिया। परम्परागत इस्लाम के विरोध में जो सम्प्रदाय उत्पन्न हो रहे थे उनमें कुछ ताक्रिक सम्प्रदाओं का विशेष महत्तव रहा है। इनमें कुछ मोतजिला सम्प्रदाय हैं। इन लोगों ने तक के आधार पर कुरान की अपौरूषयता एवं शशवत्ता पर प्रहारर कर उसी के अनुरूप भाषा में कृति की रचना कर यह सिद्ध कर दिया कि यह मनुष्य कृत रचना है। उनका कहना था कि कुरान को ईवरीय ग्रन्थ मानकर परम्परावादी मुसलमान एकेश्वरवाद का विरोध करते हैं जो इस्लाम की मूलभूत मान्यता है। दूसरा सिद्धान्त है कि मानव–नियति परमात्मा द्वारा पूर्व निर्धारित नहीं है। मनुष्य स्वयं अपने भले और बुरे कर्मो का निर्माता है जिसके लिए वह भावी जगत में पुरस्कृत अथवा दण्डित होता है[29]।

इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद माने जाते हैं। इनके प्रवर्तित पंथ, पूज्य ग्रंथ कुरान की स्थापनाओं को जीवन के बहुत पक्ष पर अधिक बल देते हैं। सामाजिक सुव्यवस्था, परमात्मा की पूजा का विधान, परमात्मा में चरम आस्था तथा उसके नियमों की अवहेलना से भावी दण्ड की व्यवस्था आदि इस पंथ की प्रमुख विशेशताएं हं। अरब के असभ्य एवं विश्रृंखल राष्ट्र में एक नीवन चेतना एवं राष्ट्रीय संगठन का भाव तो इस नवीन धर्म के फलस्वरूपअवष्य आया, परन्तु इसमें सन्यासवृति एवं चिन्तन के अभाव के कारण तथा ऐहिक ऐश्वर्य की प्रधानता क कारण स्वार्थ, राज्यलिप्सा, संघर्ष एवं रक्तपात आदि का प्रचण्ड ताण्डव इतिहास के पृष्ठों पर उभर आया। दूसरी ओर इसी से निवेशपूर्ण सन्यासवृतियां भी उभरने लगी[30]।

इस निर्वेद की भावना ने आगे चलकर सूफीमत को जन्म दिया जिस पर इल्लामेतर दर्शनों का भी प्रभाव पडा। हजरत मुहम्मद का देहवसान हो जाने के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी खलीफाओं का युग आरम्भ हुआ। प्रथम चार खलीफा उनके अभिन्न सहचर रह चुके थे। अतः इनके शासनकाल में नवीनमत और सम्प्रदाओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

अबू बकर के पश्चात हजरत उस्मान को तीसरे खलीफा के रूप में चुना गया पर इनका षासन भी कुछ समय तक चला और विद्रोहियों द्वारा 656 ई0 में महल के अंदर ही इनकी भी हत्या कर दी गई।

धोरे–धीरे इन सभी खलीफाओ का शासनकाल समाप्त हो गया और सुल्तान का शासन आरम्भ हो गया जिसका उद्देश्य मात्र समाज में भ्रान्तिपूर्वक राज्य में अधिकारपूर्ण शासन करना था परन्तु इस्लाम धर्म में आरम्भ से ही प्रचार की भावना अंतर्निहित थी जो धीरे–धीरे विजयी होकर भारत तक आ गई और अपने धर्म का प्रचार करने लगे ।

24 जून 656 को मुहम्मद साहब के दामाद हजरत अली चौथे खलीफा चुने गए। मुआविया इब्न–अबी सूफियाना खलीफा की ओर से सीरिया का शासन करता था। उसने उस्मान के खून का प्रतिशोध लेने के लिए अली के साथ घोर संग्राम किया। खलीफा अली की हार हुई तथा कुछ समयोपरान्त उनकी हत्या कर दी गई। अली की हत्या ने जैसा असर पैदा किया, वैसा जीवित रहते नही हो सका। वे शिया सम्प्रदाय में परमात्मा के वली और प्रतिनिधि स्वरूप गण्य हैं[31] ।680 में अली के पश्चात् उनका पुत्र हुसैन खलीफा नियुक्त हुआ। खलीफा हुसैन के विरूद्ध मजीद उठ खडा हुआ। कर्बला में दोनों का भयंकर युद्ध हुआ जिसमें खलीफा हुसैन और उनके सारे साथी मारे गए। माजिद ने मक्का और मदीना में भी नृशंस हत्यायें की। इस प्रकार मुहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् अरब और फारस में इस्लाम धर्म के अनुयायियों के बीच भयंकर विद्रोह, युद्ध रक्तपात, अत्याचार आदि की आंधियां चलती रही[32]।

इस्लाम धर्म की अनुयायी जनता इस्लाम की पवित्र शिक्षाओं को भूलकर मानवता के विनाश में लग गयी। मुसलमानों में व्याप्त अशांति, अनाचार एवं अव्यवस्था को देखकर उसकी उच्छंखल मनोवृतियों एवं हिंसात्मक प्रवृतियों को दूर कर प्रेम और सदभाव का वातावरण निर्माण करने के लिए धार्मिक सुधारवादी आंदोलन का सूत्रपात हुआ जिसके प्रवर्तक 'सलमान' फारसी थे।उनका यह आंदोलन सर्वथा सांस्कृतिक आधार पर स्थिर था। उन्होंने ईश्वर की एकता पर जोर दिया और बतलाया कि ईश्वर की एकता एक स्थान विशेष पर नहीं, अपितु सर्वत्र व्याप्त है। यह निगुर्ण एवं निराकार है तथा प्रेम के द्वारा उसे सहज प्राप्त किया जा सकता है किन्तु यह प्रेम लौकिक नहीं, आध्यात्मिक होना चाहिए। सलमान के इन्हीं विचारों ने सूफीमत की नींव डाली[33]।

अब समाज में सूफीमत एक मत के रूप में उदित हो चुका था तथा सूफी साधना की एक अलग पहचान बन चुकी थी। इतना नरसंहार और दमनचक्र चलने से सूफीमत अस्तित्वविहीन नहीं हुआ, अपितु उसने जन–जागरण का रूप लेकर लोगों के हृदय में सूफियों के प्रति श्रद्धा का भाव जागृत कर दिय था।

ऐसे में समाज में सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव का बढना स्वाभाविक है जिसके तहत धर्म ग्रन्थों का अध्ययन और अनुशीलन प्रारम्भ हुआ। ऐसे में सूफीमत का उदय एवं विकास प्रारम्भ हुआ। वह अपने को बचाने का प्रयास करने लगे। ऐसे में उन्होंने संबंध विच्छेद करना ही उचित समझा। सूफीयों के वर्ग विशेष की उत्पत्ति के पीछे मुसलमानी राज्य का यह स्वरूप विशेष महत्व रखता है। ऐसी विरोधी प्रवृत्ति में 'सूफीमत' का उदय हुआ जिसने सांसारिकता तथा संसार की नश्वरता की भावना से पृथक होकर ईश्वरीय चिन्तन को अपनाया।

संदर्भ सूची

1. इश्क की खूशबू है सूफी–ष्शिकान्त 'सदैव' पृ0–9
2. दि डाविन्ट्स ऑफ सूफीज्म– जान आर0 बेरी पृ0–10
3. कश्फुल : महजूब पृ0– 34
4. सूफीज्म, पृ0– 78
5. भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफी दर्शन, डॉ0 हरदेव सिंह पृ0–17
6. अल्बेरूनी इंडिया :अनुवाद सचाउ पृ0–33
7. ए लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ पर्शिया, ब्राउन भाग–1, पृ.– 417
8. सीर तुम्नबी भाग 1 पृ0–271
9. सूफीमत कन्हैया सिंह पृ0–31
10. इश्क की खुशबू है सूफी–ष्शिकान्त पृ0–9
11. तसव्वुफ अथवा सूफीमत, प्र0सं0 चन्द्रबली पाण्डेय पृ0–1
12. भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफो दर्शन–510 हरदेव सिंह पृ0–18
13. इस्लाम का विश्वकोष, भाग–4, पृ0– 681
14. हिन्दी सूफी काव्य में प्रकृति चित्रण–गायत्री पाठक पृ0–2
15. इश्क की खुशबू है सूफी–ष्शिकान्त पृ0–10
16. हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृतियां–शिव कुमार शर्मा, पृ0– 10
17. भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफी दशन–510 हरदेव सिंह पृ0–17
18. तसव्वुफ पत्रिका, जून– 1992, पृ0–2–3

19. कश्फुल महजूब, पृ0–49

20. मध्ययुगीन स्फी और सन्त साहित्य –डॉ0 मुक्तेश्वर तिवारी पृ0–48

21. हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृतियां – डॉ0 शिवकुमार शर्मा पृ0–153

22. मौ0 इरशाद अली :सूफीमत अथवा मुहम्मदन की मस्टीसिज्म मार्डन रिव्यू नवम्बर 1610

23. इ. जी. ब्राउन लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ पर्शिया 1909 पृ0– 419

24. सर विलियम जोन्स –डिक्शनरी ऑफ इस्लाम, पृ0– 423

25. ताराचन्द्र :इन्फलूरस ऑफ इस्लामिक इंडियन कल्चर पृ0–51

26. रामपूजन तिवारी : सूफीमत साधना और साहित्य पृ0– 133

27. निकोल्सनः ए लिटरेरी हिस्टरी ऑफ दी अरब पृ0–210

28. रामपूजन तिवारी :सूफीमत साधना और साहित्य पृ0– 134

29. अमी अली : दी स्पिरीट ऑफ इस्लाम पृ0–418

30. लिटरेरी हिस्टरी ऑफ पर्शिया पृ0– 389

31. सूफीमत :साधना और साहित्य द्वितीय संस्करण रामपूजन तिवारी पृ0– 74

32. हिन्दी सूफी काव्य में प्रकृति चित्रण पृ0– 6

33. पदमावत में काव्य संस्कृति और दर्शन प्रथम संस्करण,डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना पृ0–35